ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म-प्रत्यय की भूमिका का अध्ययन

Study of the Role of Academic Achievement and Self-concept In Determining the Learning Disabilities of Students of Higher Secondary Stage

Paper Submission:14/08/2021, Date of Acceptance: 26/08/2021, Date of Publication: 27/08/2021

मुकेश कुमार गौतम
प्रोफेसर
शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा, यू. पी. भारत

राजकुमार
शिक्षा संकाय
शोध छात्र
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग, आगरा, यू. पी. भारत

सारांश

ज्ञान के प्रसार एवं द्रुत तकनीकी विकास के कारण शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्यायें उभरती हुई परिलक्षित हो रही है। जिनके निराकरण के लिये दिन-प्रतिदिन अभिनव प्रयोजन भी हो रहे है जिनमें अधिगम अक्षमता भी एक प्रमुख कारण दिखायी देता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म प्रत्यय की भूमिका का अध्ययन करने हेतु किया गया है। शोध न्यादर्श के अन्तर्गत उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद् एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 (50$50) छात्र-छात्राओं का चयन आकस्मिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा किया गया है। शोधार्थी द्वारा कक्षा-10 के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म-प्रत्यय के लिये आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय परिसूची का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर यह पाया गया है कि छात्रों की अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म-प्रत्यय की सार्थक भूमिका होती है।

Due to the spread of knowledge and rapid technological development, many problems are emerging in the field of education. Innovative purposes are also being done day by day for the solution of which learning disability also appears as a major reason. The present research study has been done to study the role of academic achievement and self-concept in determining the learning disability of the students of higher secondary level. Under the research sample, 100 (50 $ 50) students studying in the schools of UP Board of Secondary Education and Central Council of Secondary Education have been selected by random sample selection method. For the academic achievement and self-concept of the students of class-10 by the researcher, R. Of. The self-suffix list prepared by Saraswat has been used. Based on the findings of the research study, it has been found that academic achievement and self-concept play a significant role in determining the learning disability of students.

मुख्य शब्द: अधिगम अक्षमता, शैक्षिक उपलब्धि, आत्म-प्रत्यय।

Key words: learning disability, academic achievement, self-concept.

प्रस्तावना

21वीं सदी को बालक की सदी कहा जाता है। बालकों पर ही किसी समाज, समुदाय अथवा राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है, आज प्रत्येक राष्ट्र बालकों के व्यक्तित्व में उचित विकास लाने के लिये प्रयासशील दिखायी देते है। लेकिन प्रत्येक बालक की अपनी योग्यतायें एवं क्षमतायें भिन्न दिखायी देती है।जिनके अधिकतम विकास हेतु उनके जन्म लेते ही उन्हें सिखाने की

क्रिया आरम्भ हो जाती है। लेकिन प्रत्येक बालक सीखता अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार ही है। सीखने की इस योग्यता में असमर्थता ही बालकों को अधिगम में अक्षमता की संज्ञा प्रदान कर देती है। अधिगम में असमर्थ बालक बौद्धिक रुप से विशिष्ट बालकों की श्रेणी में आते है। इसलिये उन्हें विशेष सामाजिक वातावरण, देखभाल एवं अनुदेशन की आवश्यकता होती है। परन्तु समस्या यह है कि अधिगम में असमर्थ बालक भी सामान्य बालकों के साथ सामान्य कक्षाओं में अध्ययन करते है। जबकि अधिगम अक्षमता वाले बालक सामान्य बालकों से पूर्णतया भिन्न होते है। तथापि उनसे सामान्य बालकों के समान ही कार्य एवं व्यवहार की आशा की जाती है। यूँ तो वर्तमान वैज्ञानिक युग के चलते प्रत्येक बालक दबाव का अनुभव करता है। लेकिन अधिगम अक्षमता वाले बालक की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी कम दिखायी देता है। अतः उनकी यह स्थिति उनके सामाजिक विकास व आत्म-प्रत्यय में बाधा पैदा करती है, सामान्यतया अधिगम अक्षमता वाले बालक सभी लोगों के द्वारा स्वीकृत एवं प्रशंसित नहीं होते है। ऐसे समय में जब बालक को अपने भविष्य हेतु सर्वाधिक दृढ़ आधार की आवश्यकता होती है। वे समाज, समुदाय व विद्यालय द्वारा उपेक्षित किये जाते है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म-प्रत्यय में कमी आती है, तथा वे समाज में अलगाव की स्थिति अनुभव करते है। अतः वर्तमान समय में राष्ट्र के समुचित एवं सम्पूर्ण विकास के लिये अधिगम रुप से अक्षम बालकों को विशेष प्रेरणा एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता है। लेकिन अधिगम में अक्षमता वाले बालक शैक्षिक रुप से विशिष्ट होते है। अतः उन्हें विशेष सामाजिक वातावरण विशेष सेवायें एवं सुविधाओं की आवश्यकता होती है। ताकि वे अपनी योग्यताओं का विकास कर सकें तथा राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें।

अधिगम अक्षमता से अभिप्राय

अधिगम अक्षमता वाले बालक वे बालक होते है जो लिखने, पढ़ने, बोलने, सुनने, समझने, सम्प्रेषण एवं गणितीय गणना करने में सामान्य बृद्धि वाले होते हुये भी अक्षमता का अनुभव करते है। साथ ही वे कुछ विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं से ग्रसित होते है। जैसे- स्वाद हीनता, संख्या विषयक अक्षमता, सम्प्रेषण तथा पढ़ने-लिखने आदि में अक्षमता आदि। इसी सन्दर्भ में फेडरल रजिस्टर (1977) ने लिखा है कि-"अधिगम अक्षमता का अर्थ एक या एक से अधिक आधारभूत मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के असंतुलन से है। जिसमें समझने, लिखने, बोलने एवं सुनने की अक्षमता सम्मिलित है। यह असन्तुलन अधिकांशतः बालक की सुनने, सोचने, पढ़ने, लिखने और गणितीय गणना करने एवं प्रेषित सूचनाओं को समझने की सामान्य योग्यता रखने से है।"

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य

शैक्षिक उपलब्धि वह स्थान है जो कि विशेष या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, संयम एवं कौशलों का मापन करना है। इसी परिप्रेक्ष्य में ट्राचलर (1960) ने लिखा है कि-" अधिक विशिष्ट रुप से देखा जाये, तो शैक्षिक उपलब्धि वार्षिक परीक्षा में विद्यालयों द्वारा अंकों का समग्र योग माना जाता है।" इसी सन्दर्भ में एन. एच. स्ट्राची (1961) ने लिखा है कि-" शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है। जिसका परिणाम उनको वार्षिक परीक्षा में किये गये कार्यो के परिणामों से मिलता है।" सामान्य शब्दों में कहा जाता है कि शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का मापन एवं मूल्यांकन करना है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयासों का परिणाम मात्र है।

आत्म-प्रत्यय से आशय

आत्म-प्रत्यय से अभिप्राय है वे समस्त प्रत्यय, विश्वास, अभिवृत्तियाँ और भावनायें जिसे व्यक्ति स्वयं की विशेषताओं के भाग के रुप में देखता है। वह स्वास्थ्य, शारीरिक आकार, मानसिक योग्यतायें, शैक्षिक स्तर, व्यवहारगत विशेषतायें, मानसिक, स्वास्थ्य, संवेगात्मक प्रवृत्तियों और सामाजिक-आर्थिक स्तर का एक विचार है जो व्यक्ति में स्वाभाविक रुप से विकसित होते है। इसी परिसन्दर्भ में परकिन (1987) ने लिखा है कि-" आत्म-प्रत्यय वह प्रत्यक्षीकरण विश्वास, भावना और अभिवृत्ति है जिसे व्यक्ति अपनी विशेषताओं के रुप में देखता है।"

माना जाता है कि शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म-प्रत्यय अहम भूमिका अदा करते है। इसका परीक्षण करने हेतु प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया गया है।

समस्या कथन

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्म-प्रत्यय की भूमिका का अध्ययन

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

उच्च माध्यमिक स्तर

उच्च माध्यमिक स्तर शब्द से तात्पर्य है कि वे शैक्षिक संस्थायें जहाँ पर कक्षा-11 एवं 12 की कक्षायें संचालित है और उन्हें उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है, से है।

छात्र

छात्र शब्द से अभिप्राय उत्तर प्रदेश शासन के आगरा मण्डल आगरा में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 एवं 12 के छात्र-छात्राओं से है।

अधिगम अक्षमता

अधिगम अक्षमता से आशय है कि वे बालक जो लिखने, पढ़ने, बोलने, सुनने, समझने, सम्प्रेषण तथा गणितीय गणना करने में सामान्य बुद्धि रखते हुये भी अक्षमता का अनुभव करते है। साथ ही कुछ विशेष शैक्षिक समस्याओं से ग्रसित है। जैसे-स्वाद हीनता, संख्या विषयक अक्षमता, सम्प्रेषण तथा पढ़ने एवं लिखने में अक्षम है, से है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय है वह स्थान जहाँ पर विभिन्न विषयों अथवा पाठ्यक्रमों का संचालन व्यक्ति के ज्ञान, संयम एवं कौशल के मापन एवं मूल्यांकन के लिये किया जाता जाये, से है।

आत्म-प्रत्ययः- आत्म प्रत्यय से तात्पर्य है वे सभी प्रत्यय, विश्वास, अभिवृत्तियाँ एवं भावनायें जिसे मनुष्य स्वयं की विशेषताओं के एक भाग के रुप में देखता है। यह उसके स्वास्थ्य शारीरिक बनावट, मानसिक क्रियाओं, शैक्षिक स्तर, व्यावहारिक विशेषताओं, मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक प्रवृत्तियों और सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि के सन्दर्भ में विचार करने से है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक अधिगम अक्षमता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन करना।
4. शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि की भूमिका का अध्ययन करना।
5. शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में आत्म-प्रत्यय की भूमिका का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि की कोई भूमिका नहीं होगी।

अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में आत्म प्रत्यय की कोई भूमिका नहीं होगी।

अध्ययन का परिसीमांकन

सीमित समय एवं असीमित स्रोतों के कारण प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा-11 एवं कक्षा-12 के यू0 पी0 बोर्ड के 50 एवं सी0 बी0 एस0 ई0 बोर्ड के 50 विद्यार्थियों तक ही परिसीमित किया गया है। इस प्रकार 100 छात्रों तक ही सीमित रखा गया है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये ''वर्णनात्मक शोध विधि'' का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन निम्न रुपों में किया गया है-

जनसंख्या

जनसंख्या से अभिप्राय उन सभी व्यक्तियों, वस्तु अथवा तथ्यों के समूह से है, जो किन्ही पूर्व परिभाषित विशेषताओं के क्षेत्र के अन्तर्गत आते है। अतः जनसंख्या के क्षेत्र के अन्तर्गत उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद् एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के उच्च विद्यालयों में अध्ययनरत् 250 छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन निम्न रुप में किया गया है।

शोध अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु न्यादर्श के अन्तर्गत उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षा परिषद् इलाहाबाद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से सम्बद्ध उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 100 छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है। जिसमें 50 पुरुष एवं 50 महिलायें है। न्यादर्श निम्न प्रवाह सचित्र (Flow chart) के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है-

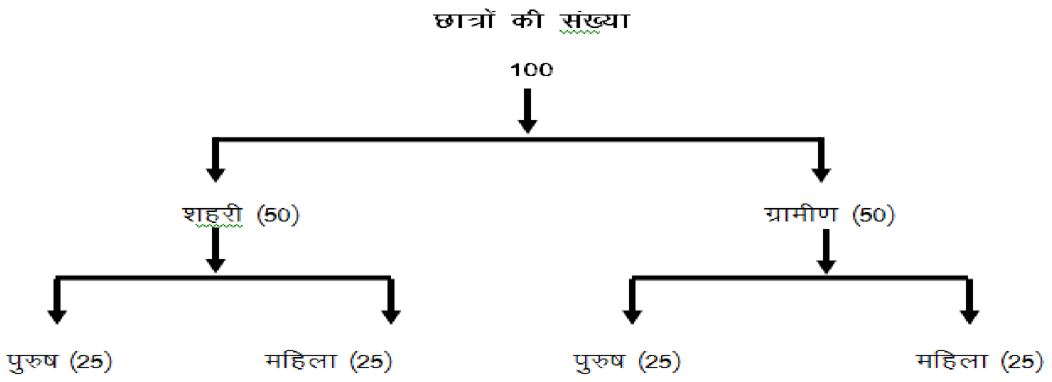

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है-

1. अधिगम अक्षमता के लिये स्वयं निर्मित अधिगम अक्षमता मापनी का प्रयोग किया गया है।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के लिये कक्षा-11 एवं कक्षा-12 के बोर्ड परीक्षा के परीक्षाफल को आधार बनाया गया है।
3. आत्म-प्रत्यय के अध्ययन हेतु आ. के. सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय परिसूची का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययनों में चरों को दो वर्गों में रखा गया है-

1. स्वतन्त्र चर- अधिगम अक्षमता
2. आश्रित चर- शैक्षिक उपलब्धि, आत्म प्रत्यय

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये सांख्यिकीय प्रविधियों के रुप में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन और प्रदीपगमन की गणना की गयी है-

शोध अध्ययन के परिणाम एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्यों के अनुसार परिणामों का विश्लेषण निम्न प्रकार किया गया है-

प्रथम उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक अधिगम अक्षमता का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोध कर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा-11 एवं कक्षा-12 के छात्र-दात्राओं का चयन किया गया। स्वयं निर्मित अधिगम अक्षमता मापनी में प्राप्त अंकों के आधार पर उन्हें उच्च, औसत एवं निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जिसे तालिका संख्या 1 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है-

तालिका संख्या - 01

अधिगम अक्षमता सम्बन्धी आकड़ों का उच्च, औसत एवं

वर्ग अन्तराल	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रतिशत	टिप्पणी
80 से अधिक	24			24%	उच्च
60-79	60	181.64	13.30	60%	औसत
60 से कम	16			16%	निम्न
योग	100			100%	

निम्न स्तरों का विभक्तीकरण

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से विदित है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 80 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को उच्च श्रेणी में रखा गया है। 60 से 79 अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को औसत श्रेणी तथा 60 से कम अंक प्राप्त करने वाले छात्रों को निम्न श्रेणी में रखा गया है। उपर्युक्त श्रेणी के विभाजन से स्पष्ट है कि उच्च अधिगम अक्षमता रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 24% औसत अधिगम अक्षमता रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 60% तथा निम्न अधिगम अक्षमता रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 16% है।

द्वितीय उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा-11 एवं कक्षा-12 के छात्रों का चयन किया गया है। कक्षा-10वीं के प्रतिशत के प्राप्तांकों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का मापन किया गया है। प्रतिशत प्राप्तांकों

विश्लेषण कर उन्हें उच्च, औसत एवं निम्न तीन श्रेणियों में बाँटा गया है जिसे तालिका संख्या 2 के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है-

तालिका संख्या - 02

शैक्षिक उपलब्धि सम्बन्धी आकड़ों का उच्च, औसत एवं निम्न स्तरों का विभक्तीकरण

वर्ग अन्तराल	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रतिशत	टिप्पणी
80 से अधिक	30	134.92	11.33	30%	उच्च
60 से 79	50			50%	औसत
60 से कम	20			20%	निम्न
योग	100			100%	

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 80 से अधिक के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को उच्च श्रेणी में, 60 से 79 के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को औसत श्रेणी में तथा 60 से कम के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को निम्न श्रेणी में विभाजित किया गया है। उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 10ः औसत अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 70ः तथा निम्न अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत 20ः है।

तृतीय उद्देश्य

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन करनाः- इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा-11 तथा कक्षा-12वीं के छात्रों का चयन किया गया। शोधकर्ता के द्वारा आर0 के0 सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय की परिसूची में प्राप्त अंकों के आधार पर उन्हें उच्च, औसत एवं निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। जिसे तालिका संख्या 3 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या - 03

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आत्म-प्रत्यय सम्बन्धी आंकड़ों का उच्च, औसत एवं निम्न स्तरों का विभक्तीकरण

वर्ग अन्तराल	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रतिशत	टिप्पणी
80 से अधिक	30	134.92	11.33	30%	उच्च
60 से 79	50			50%	औसत
60 से कम	20			20%	निम्न
योग	100			100%	

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 80 से अधिक के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को उच्च श्रेणी में, 60 से 79 के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को औसत श्रेणी में तथा 60 से कम के अन्तर्गत आने वाले छात्रों को निम्न श्रेणी में विभाजित किया गया है। उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उच्च आत्म-प्रत्यय रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 30% औसत आत्म प्रत्यय रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 50% तथा निम्न आत्म-प्रत्यय रखने वाले छात्रों का प्रतिशत 20% है।

चतुर्थ उद्देश्य

अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि की भूमिका का अध्ययन करना।

इस उद्देश्य के सन्दर्भ में शोधार्थी द्वारा शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में शैक्षिक उपलब्धि की भूमिका का अध्ययन करने हेतु प्रदीपगमन विश्लेषण की गणना की गयी है। जिसे तालिका संख्या 4 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

तालिका संख्या- 4 वर्णनात्मक सांख्यिकीय

क्रम संख्या	निर्धारक तत्व	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या
1	अधिगम अक्षमता	181.64	13.30453	100
2	शैक्षिक उपलब्धि	65.92	08.30	100

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित मध्यमान क्रमशः 181.64 एवं 65.92 प्राप्त हुये एवं सम्बन्धित प्रमाणिक विचलन 13.30 एवं 8.30 प्राप्त हुआ है।

प्रतिमान सारांश

प्रतिमान	R प्रदीपगमन	वर्ग प्रदीपगमन	समायोजित प्रदीपगमन	प्रमाणिक त्रुटि विश्लेषण
1	.787	.619	.611	8.29016

उक्त दोनों चरों के मध्य 61.9% का सामान्य प्रसारण पाया गया है एवं उक्त दोनों चरों के मध्य मध्यमान 78.03 प्राप्त हुआ है। जो .01 स्तर पर सार्थक है

प्रतिमान	वर्गो का योग	स्वतत्रांश	वर्ग माध्य	F	सार्थकता
प्रदीपगमन अवशिष्ट	5370.136 3303.384	1 48	5370.136 68.820	78.855	.000
कुल	8673.520	49			

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक अक्षमता का एक सार्थक निर्धारक है एवं तालिका 3 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उक्त दोनों चरों के प्रदीपगमन समीकरण हेतु बीटा मान जो .787 प्राप्त हुआ है। जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में सार्थक रुप से भूमिका निभाती है।

पंचम उद्देश्य

अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में आत्म-प्रत्यय की **भूमिका का अध्ययन**

इस उद्देश्य के सन्दर्भ में शोधार्थी द्वारा शैक्षिक अधिगम अक्षमता को निर्धारित करने में आत्म-प्रत्यय की भूमिका का अध्ययन करने हेतु प्रदीपगमन विश्लेषण की गणना की गयी। जिसे निम्न तालिका संख्या 5 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

तालिका संख्या– 5

वर्णनात्मक सांख्यिकीय

क्रम संख्या	अध्ययन के चर	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	संख्या
1	अधिगम अक्षमता	181.64	13.30453	100
2	आत्म–प्रत्यय	134.96	11.33	100

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियांे की अधिगम अक्षमता एवं आत्म-प्रत्यय से सम्बन्धिम मध्यमान क्रमशः 181.64 एवं 134.96 प्राप्त हुये है, तथा सम्बन्धिम प्रमाणिक विचलन 13.30 एवं 11.33 प्राप्त हुये है।

प्रतिमान सारांश

प्रतिमान	R प्रदीपगमन	वर्ग प्रदीपगमन	समायोजित प्रदीपगमन	मानक त्रुटि विश्लेषण
1	.539	.291	.276	11.32

उक्त दोनां चरों के मध्य 29.1% का सामान्य प्रसारण पाया गया है, एवं उक्त दोनों चरों के मध्य मध्यमान 53.09

प्राप्त हुआ है जो .01 .स्तर पर सार्थक है।

प्रतिमान	वर्गो का योग	स्वतत्रांश	वर्ग माध्य	F	सार्थकता
प्रदीपगमन अवशिष्ट	2521.602 6151.918	1 48	2521.602 128.820	19.675	.000
कुल	8673.520	49			

उपर्युक्त तालिका के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि आत्म-प्रत्यय शैक्षिक अधिगम अक्षमता का एक सार्थक निर्धारक है। तालिका संख्या 5 के अध्ययन से स्पष्ट है कि उक्त दोनों चरों के मध्य प्रदीपगमन विश्लेषण हेतु बीटा मान जो .291 प्राप्त हुआ है, वह स्तर पर सार्थक है। अतः आत्म-प्रत्यय, अधिगम अक्षमता का सार्थक रुप से निर्धारक है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न निष्कर्ष निकाले गये है-

1. विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित मध्यमान क्रमशः 181.64 तथा 65.92 प्राप्त हुये, एवं सम्बन्धित प्रमाणिक विचलन 13.30 एवं 8.33 प्राप्त हुये। अतः अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक अधिगम अक्षमता का एक सार्थक निर्धारक है। उक्त दोनों चरों के मध्य प्रदीपगमन समीकरण हेतु बीटा मान जो .787 प्राप्त हुआ है, वह .01 स्तर पर सार्थक है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम अक्षमता का सार्थक रुप से निर्धारक है।
2. विद्यार्थियों की अधिगम अक्षमता एवं आत्म-प्रत्या से सम्बन्धित मध्यमान क्रमशः 181.64 एवं 134.96 प्राप्त हुये, तथा सम्बन्धित प्रमाणिक विचलन 13.30 एवं 11.33 प्राप्त हुये। अतः अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि आत्म-प्रत्यय, शैक्षिक अधिगम अक्षमता का एक निर्धारक है। उक्त दोनों चरों के मध्य 27.6 का सामान्य वितरण पाया गया है। उक्त दोनों चरों के मध्य बीटा मान 53.09 प्राप्त हुआ है, जो .01 स्तर पर सार्थक है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि आत्म-प्रत्यय, शैक्षिक अधिगम अक्षमता का एक निर्धारक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जिलियन एल. ए. (2009) सेल्फ कॉन्सेप्ट आफ स्टूडेन्ट संविद इन सेल्फ कॉन्टेड ऐनवायरमेंट, इण्टरनेशनल डिजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट।*
2. *हुसैन एन. (2005) लाइफ स्ट्रैसाइन ए ड्राइव लवरिया आॅफ पाकिस्तान, ब्रिटिश जनरल आर्फ साइकेट्री, 190 (5): 36-41*
3. *कपिल, एच. के. (2007) अनुसंधान विधियाँ, (व्यवहारिक विज्ञानों में) तेरहवाँ संस्करण, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।*
4. *कपिल, एच. के. (2011) सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, हॉस्पीटल रोड आगरा।*
5. *कील, लोकेश (2000) शिक्षा अनुसंधान की विधि यू. बी. एस. पब्लिकेशन एवं डिस्ट्रीबुशन, नई दिल्ली।*
6. *कुरुबिला, के. एस. (2007) पॉवर्टी सोशल स्ट्रेस एण्ड मोटर हैल्थ इण्डियन जनरल आॅफ मेडिकल रिसर्च, 64 (5) 67-69।*
7. *लोकनन्दा जी एण्ड कुसुमाए (2000) लर्निंग डिसएविलिटीज डिस्क्वरी पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।*
8. *www.google .com*
9. *www.rediffmail .com*
10. *www.ugc.com*
11. *11. www.shodhganga.com itc.*